पुनरावृत्ति कार्य पत्र-3

नाम _____ कक्षा _____

अनुक्रमांक _____ तिथि _____ शिक्षक/शिक्षिका के हस्ताक्षर

निर्धारित समय : 30 मिनट **अधिकतम अंक : 10**

निम्नलिखित काव्यांशों को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर दीजिए। **5 × 2 = 10**

I. क्षमा शोभती उस भुजंग को जिसके पास गरल हो
उसको क्या जो दंतहीन विषरहित, विनीत, सरल हो।
तीन दिवस तक पंथ माँगते रघुपति सिंधु किनारे
बैठे पढ़ते रहे छंद अनुनय के प्यारे-प्यारे।
उत्तर में जब एक नाद भी उठा नहीं सागर से
उठी अधीर धधक पौरुष की आग राम के शर से।
सिंधु देह धर त्राहि-त्राहि करता आ गिरा शरण में
चरण पूज दासता ग्रहण की बँधा गूढ़ बंधन में।
सच पूछो, तो शर में बसती है दीप्ति विनय की
संधि-वचन संपूज्य उसी का जिसमें शक्ति विजय की।

1. क्षमा किसे शोभती है?
(क) विनम्र को (ख) सहनशील को (ग) सामर्थ्यवान को (घ) शक्तिहीन को

2. समुद्र के किनारे बैठकर कौन अनुनय-विनय कर रहे थे?
(क) श्रीराम (ख) हनुमान (ग) विष्णु (घ) लक्ष्मण

3. श्रीराम किसकी प्रतिक्रिया न पाकर क्रोधित हो उठे?
(क) हिमालय की (ख) समुद्र की (ग) रेत की (घ) इन सबकी

4. संधि किसके लिए संपूज्य है?
(क) निर्बलों के लिए (ख) सरल लोगों के लिए (ग) शक्तिशाली लोगों के लिए (घ) इनमें सभी

5. **कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–**
कथन (A) – राम को बहुत क्रोध आया और उनके शरों से मानो अग्नि धधक उठी।
कारण (R) – तीन दिन तक सागर की प्रार्थना करते रहने के बाद भी सागर की ओर से कोई भी उत्तर नहीं मिला।
(क) कथन (A) सही है और कारण (R) गलत है।
(ख) कथन (A) गलत है और कारण (R) सही है।
(ग) कथन (A) सही है पर कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(घ) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

II. कहती है सारी दुनिया जिसे किस्मत

नाम है उसका हकीकत में मेहनत।

जो रचते हैं खुद अपनी किस्मत, वे कहे जाते हैं– साहसी

जो करते हैं ईश्वर से शिकायत, वे कहे जाते हैं– आलसी।

जो रुक गया, मिट गया उसका नामोंनिशाँ

जो चलता रहा, अपनी मंज़िल वो पा गया।

खुशी के हकदार हैं वही, जिन्होंने दुख को सहा

छोड़ के दामन फूलों का, काँटों की राह को चुना।

निराशा का अंधकार मिटाकर, आशा के दीप जलाओ।

छोड़ भाग्य की दुहाई, अपनी किस्मत स्वयं बनाओ।

1. 'साहसी' और 'आलसी' के अंतर को स्पष्ट करने वाले विकल्प/विकल्पों का चयन कीजिए।

(*i*) साहसी व्यक्ति के लिए परिश्रम ही उसका भाग्य होता है।

(*ii*) आलसी व्यक्ति परिश्रम नहीं करना चाहते केवल भाग्य के सहारे रहते हैं।

(*iii*) साहसी व्यक्ति अपना भाग्य स्वयं निर्मित करते हैं।

(*iv*) आलसी व्यक्ति भगवान भरोसे ही जीवन यापन करते हैं।

विकल्प

(क) कथन (*i*) और (*ii*) सही हैं।

(ख) कथन (*ii*) और (*iv*) सही हैं।

(ग) कथन (*i*), (*ii*) और (*iii*) सही हैं।

(घ) कथन (*i*), (*ii*), (*iii*) और (*iv*) सही हैं।

2. कौन लोग ईश्वर से शिकायत करते हैं?

(क) भक्त (ख) आस्तिक (ग) परिश्रमी (घ) आलसी

3. खुशी का हकदार कौन है?

(क) जिसने काम किया (ख) जिसने संपत्ति अर्जित की

(ग) जिसने ईश्वर की आराधना की (घ) जिसने दुख सहा

4. कवि किसके दीप जलाने की बात कर रहा है?

(क) आस्था के (ख) विश्वास के (ग) आशा के (घ) निराशा के

5. हमें किसकी दुहाई देनी छोड़ देनी चाहिए?

(क) अभाज्य की (ख) ईश्वर की (ग) भाग्य की (घ) इनमें किसी की नहीं

पुनरावृत्ति कार्य पत्र-4

नाम _____ कक्षा _____

अनुक्रमांक _____ तिथि _____ शिक्षक/शिक्षिका के हस्ताक्षर

निर्धारित समय : 40 मिनट **अधिकतम अंक : 10**

निम्नलिखित काव्यांशों को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए। **5 × 2 = 10**

I. जिस-जिससे पथ पर स्नेह मिला, उस-उस राही को धन्यवाद।
जीवन अस्थिर, अनजाने ही हो जाता पथ पर मेल कहीं
सीमित पग-डग, लंबी मंज़िल तय कर लेना कुछ खेल नहीं
दाएँ-बाएँ सुख-दुख चलते सम्मुख चलता पथ का प्रसाद
जिस-जिससे पथ पर स्नेह मिला उस-उस राही को धन्यवाद।
जो साथ न मेरा दे पाए उनसे कब सूनी हुई डगर
मैं भी न चलूँ यदि तो भी क्या राही मर लेकिन राह अमर।
इस पथ पर वे ही चलते हैं जो चलने का पा गए स्वाद
जिस-जिससे पथ पर स्नेह मिला उस-उस राही को धन्यवाद।

1. कवि किसे धन्यवाद दे रहा है?
.....

2. कवि ने जीवन को क्या कहा है?
.....

3. कवि किसे अमर कह रहा है?
.....
.....

4. कवि की दृष्टि में कौन लोग इस डगर पर चल पाते हैं?
.....
.....

5. इस काव्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए।
.....

II. हमें जीवनधार अन्न तू ही देती है
बदले में कुछ नहीं किसी से तू लेती है
श्रेष्ठ एक से एक विविध द्रव्यों के द्वारा
पोषण करती प्रेम-भाव से सदा हमारा।
हे मातृभूमि! उपजे न जो तुझसे-अंकुर अंश कभी,

तो तड़प-तड़प कर जल मरे जठरानल मैं हम सभी।।
पाकर तुझसे सभी सुखों को हमने भोगा,
तेरा प्रत्युपकार कभी क्या हमसे होगा?
तेरी ही यह देह तुझी से बनी हुई है,
बस तेरे ही सुरस सार से सनी हुई है,
फिर अंत समय तू ही इसे अचल देख अपनाएगी।
हे मातृभूमि! यह अंत में तुझमें ही मिल जाएगी।
निर्मल तेरा नीर अमृत के सम उत्तम है
शीतल-मंद-सुगंध पवन हर लेता श्रम है।
षट् ऋतुओं का विविध दृश्ययुत अद्‌भुत क्रम है
हरियाली का फर्श नहीं मखमल से कम है।
शुचि सुधा सींचता रात में तुझ पर चंद्र प्रकाश है
हे मातृभूमि! दिन में तरणि करता तम का नाश है।।

1. कवि अपने सुखों का निमित किसे मान रहे हैं?

.....

2. कवि किसके प्रत्युपकार की बात कह रहे हैं?

.....

3. यह देह किससे बनी हुई है?

.....

.....

4. अंत में इस देह को कौन अपनाएगा?

.....

.....

5. इस काव्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए।

.....